Sample Preview of the Solved Sample Question Papers

Published by:

NEERAJ PUBLICATIONS

www.neerajbooks.com

Sample Preview of The Chapter

Published by:

NEERAJ PUBLICATIONS

www.neerajbooks.com

अर्थव्यवस्था एवं समाज
(Economy and Society)

आर्थिक घटनावृत के समाजशास्त्रीय पक्ष
(Sociological Aspects of Economic Phenomenon)

अर्थव्यवस्था, समाज और संस्कृति
(Economy, Society and Culture)

1

परिचय

राष्ट्रों में विभिन्न प्रकार के समाज पाये जाते हैं। प्रत्येक समाज में आर्थिक, सामाजिक और सांस्कृतिक स्तर पर परिवर्तन होते रहते हैं। इन परिवर्तनों का आधार विकास और समस्याएँ मानी गई हैं। अर्थशास्त्र और समाजशास्त्र एक-दूसरे के पूरक माने गये हैं, इसलिए आरंभिक वर्षों में केवल आर्थिक सिद्धांतों को आधार बनाकर समाजशास्त्र की उत्पादन गतिविधियों पर विचार किया जाता था, परंतु बाद में आर्थिक विकास द्वारा समाज में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई गई। आर्थिक विकास से समाज और संस्कृति दोनों सकारात्मक रूप से प्रभावित हुए। हालांकि समाज में आर्थिक विकास हो राजनीतिक विकास या सामाजिक विकास, परिवर्तन की प्रक्रिया में अनेक प्रकार की संभावनाएँ पाई जाती हैं। 1990 के दशक में परिवर्तन, यानी आर्थिक विकास में आई तीव्रता को वाशिंगटन सहमति के नाम से जाना गया है।

अध्याय का विहंगावलोकन

अर्थशास्त्र तथा समाजशास्त्र

अर्थशास्त्र और समाजशास्त्र एक-दूसरे के पूरक माने गये हैं। इसलिए कुछ विद्वान आर्थिक परिदृश्यों का मूल्यांकन सामाजिक दृष्टि के बिना अधूरा मानते हैं क्योंकि समाज में विकास की गति में तीव्रता है, इसलिए इस विकास का प्रभाव भी तीव्र है। कार्ल मार्क्स के अनुसार, समाज में होने वाले परिवर्तन और पुन: उत्पादन अर्थव्यवस्था की धुरी हैं। इनमें सांस्कृतिक कारकों की प्रमुख भूमिका होती है। दुर्खीम के अनुसार, अर्थव्यवस्थाएँ और समाजवर्गीय मूल्यांकन आर्थिक समाजशास्त्र का आधार है क्योंकि आधुनिक समाजों के समाज में समस्याएँ बढ़ती हैं, इसलिए विभिन्न सामाजिक समस्याओं के उद्‌भव होने का खतरा रहता है। सामाजिक सिद्धांतकारों के अनुसार परिवर्तनों के लिए कई श्रेणियों की पहचान की गई है। अर्थव्यवस्था के विकास की व्याख्या हेतु राजनैतिक अर्थव्यवस्था और आर्थिक समाजशास्त्र की विभिन्न विचारधाराओं को विद्वानों द्वारा बल दिया जा रहा है। जैसे कि मार्क्सवादी अर्थव्यवस्था, वर्गीय विश्लेषण सिद्धांत वेबर की सांस्थानिक पहल, दुर्खीम की अवधारणा संरचना का सिद्धांत, परंतु पार्सन और पोलानी द्वारा आर्थिक समाजशास्त्र के क्षेत्र में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई गई है। समाजशास्त्री और अर्थशास्त्री बाजारों और उनकी व्यवस्थाओं से मतभेद रखते हैं, इसलिए इनके सिद्धांतों को सुधारा भी गया है।

समाज, संस्कृति तथा अर्थव्यवस्था में संबंध

आर्थिक समाजशास्त्र आर्थिक और सामाजिक परिदृश्य के बीच संबंधों का अध्ययन और मूल्यांकन करता है। समाजशास्त्रियों का मत है कि मनुष्यों के कार्यों का सामाजिक और सांस्कृतिक आधार होता है, इसलिए सामाजिक कार्यों के पीछे सांस्कृतिक समस्याएँ पाई जाती हैं। मैक्स वेबर द्वारा 1978 में सामाजिक कार्यों की व्याख्या परंपरा, प्रभाव और तर्कसंगतता, वैधानिकता आदि तरीकों द्वारा की गई है। पियरे बॉर्दयू, कांत के तर्क से सहमत हैं कि व्यक्ति नैतिक मानदंडों और सामाजिक गतिविधियों से अधिक प्रभावित होते हैं। प्राचीन काल में नगरीय अर्थव्यवस्था भारतीय अर्थव्यवस्था का अनादि काल से प्रमुख हिस्सा रही है। भारत में प्राचीन सभ्यता के रूप में सिंधु घाटी की सभ्यता का आधार कृषि प्रधान था। हड़प्पा, मोहनजोदड़ो आदि सभ्यताएँ सिंधु घाटी का विकसित रूप हैं। आरंभिक चरण, ऋग्वेद काल, समकालीन साहित्य, मौर्य काल, गुप्त साम्राज्य तक नौवीं शताब्दी के बाद

NEERAJ PUBLICATIONS www.neerajbooks.com

www.neerajbooks.com

अर्थव्यवस्था की प्रवृत्ति व्यापार, वाणिज्य, कला-शिल्प, गिल्ड प्रणाली और सामाजिक वर्गों में रही।

1. **व्यापार व वाणिज्य**—नगरीय अर्थव्यवस्था में व्यापार और वाणिज्य प्राचीन काल से ही महत्त्वपूर्ण स्थान रखते हैं। नगरों में व्यापारी उत्पाद और कृषि का व्यापार आंतरिक रूप में करते हैं। बाद में बाहरी रूप से भी व्यापार होने लगा जैसे कि सिक्कों के रूप में। रोम, अरब देश, पर्सिया, चीन और दक्षिण पूर्वी एशियाई देशों में व्यापार होने लगा। इस व्यापार में शामिल था—शिल्प, हाथ के बने सुंदर बर्तन, वस्त्र, नगरीय अर्थव्यवस्था की सामग्री, हाथी दांत के समान, सोना आदि।
2. **कला एवं शिल्प**—भारतीय नगरीय अर्थव्यवस्था में प्राचीन शिल्प व कला से जुड़े लोगों के जीवनयापन में शामिल थे—लकड़ी का काम, लुहारों का काम, चमड़े का काम, मिट्टी के बर्तन, हाथी दांत का काम, जुलाहों, चित्रकारी आदि।
3. **गिल्ड प्रणाली**—प्राचीन भारतीय नगरीय अर्थव्यवस्था में गिल्ड प्रणाली में कुंभकारों की श्रेणी, लुहारों, जुलाहों तथा हाथी दांत के कारीगर आदि का महत्त्वपूर्ण योगदान था। प्रत्येक श्रेणी के अंतर्गत कार्य करने में कार्यों की सुरक्षा के साथ-साथ प्रतिस्पर्धा और सामाजिक स्तरीकरण की श्रेणी के कार्य करने के नियम, आचार संहिताएँ और गुणवत्ता का विशेष स्थान होता था।

मार्क्स, वेबर, दुर्खीम, सीमेल तथा अन्य विचारकों के आलेख

समाज के आर्थिक और सामाजिक जीवन में आर्थिक समाजशास्त्र के अंतर्गत कई विचारधाराएँ पाई देखी हैं, जैसे कि कार्ल मार्क्स की वर्गीय विभाजन वाली विचारधारा, जो कि उत्पादन के स्वरूपों की व्याख्या करती है। आर्थिक समाजशास्त्र की दूसरी विचारधारा अभिजात वर्ग के लोगों के आपसी संबंधों और सामाजिक संसाधनों पर अधिकार का विवरण दर्शाती है। तीसरी विचारधारा संस्थागत विचारधारा है, जिसके अंतर्गत दुर्खीम का मानना है कि इस विचारधारा के अनुयायी विश्वासों, सामाजिक मिथकों, विचारों, अर्थव्यवस्था की सामाजिक व्यवस्था आदि का अध्ययन करते हैं।

कार्ल मार्क्स (1818-1883)

कार्ल मार्क्स के अनुसार, मनुष्य समाज का सबसे बड़ा कारक श्रमिक को माना गया है। कार्ल मार्क्स ने अपनी पुस्तक 'कैपिटल में मालिक और श्रमिक के बीच संघर्ष का वर्णन नहीं किया, इसलिए शास्त्रीय अर्थशास्त्रियों की आलोचना की गई है। कार्ल मार्क्स द्वारा बुनियादी पूँजीवादी अर्थव्यवस्था के मौलिक संस्थानों में मौजूद सामाजिक समस्याओं पर बल दिया गया है। हीगल के विचारों से कार्ल मार्क्स काफी प्रभावित थे। पूँजीवाद समाज के वर्गों में संघर्ष की स्थिति को उत्पन्न करता है, जिससे प्रगतिवादी संघर्ष पैदा होता है क्योंकि पूँजीवादी अर्थव्यवस्था में पूँजीपतियों को लाभ मिलने के साथ उत्पादन के संस्थानों पर निजी प्रभाव नहीं बनाया जा सकता, इसलिए मजदूर उत्पादन की प्रक्रिया द्वारा उत्पादों को वेतन से ज्यादा मूल्यवान बनाता है। इस प्रकार कम वेतन और अधिक मूल्य का उत्पादन पूँजीपति के लाभ के स्रोत का निर्माण करता है। पूँजीपति मजदूरों पर कम खर्च कर अधिक लाभ कमाते हैं, परंतु इससे बेरोजगारी और मुनाफा दर में गिरावट और उत्पादन में उछाल कम हो जाता है क्योंकि लाभ मजदूर के शोषण पर निर्भर करता है। इसलिए वर्गीय संरचना, सांस्कृतिक, राजनीतिक चेतना और सामाजिक वर्गों की गतिविधियों में भेद उत्पन्न हो जाते हैं।

मेक्स वेबर (1864-1920)

1890 के दशक में मेक्स वेबर ने आर्थिक समाजशास्त्र का शोध कार्य किया। शोध के अंतर्गत आर्थिक व्यवहार को जानने के लिए गैर-आर्थिक संस्कृति और संस्थागत स्थितियों ने प्रमुख योगदान दिया था। उनका शोध 'द प्रोटेस्टेंट एथिक एंड द स्प्रिट ऑफ कैपिटेलिज्म' को आधुनिक पूँजीवाद के उद्‌भव का आधार माना गया। उनके अनुसार सामाजिक और सांस्कृतिक मूल्यों द्वारा पूँजीवादी विचारों का उद्‌भव हुआ। पूर्व-निर्धारण का सिद्धांत आर्थिक संपन्नता में चयन को दर्शाता है।

काल्विनवाद के सिद्धांत की सफलता के कारक के रूप में स्वीकृति मिली है क्योंकि इसमें कार्य सभी के लिए विशेष महत्त्व रखता है और आर्थिक स्तर का आधार है। इसलिए पूँजीवाद का उद्देश्य भी पूँजी से उच्च मुनाफा कमाकर आर्थिक स्तर को ऊपर उठाना है। मैक्स वेबर ने अपने विश्लेषण में यूरोप के सांस्कृतिक रूप और पूँजीवादी उद्यमता के ढाँचे के विकास को ऐतिहासिक जटिलता उत्पन्न कर दी है क्योंकि प्रत्येक गतिविधि गतिशील है और संस्थागत है। इस संस्थागत ढाँचे का लाभ होना अनिवार्य है, इसलिए यह आर्थिक विकास की गारंटी माना गया है। मैक्स वेबर ने वर्गों के सूत्र पर ध्यान केंद्रित किया। इसीलिए सामाजिक अनुभवों के आधार पर वास्तविक अस्तित्व तक पहुँचा जा सकता है।

ऐमाइल दुर्खीम (1858-1917)

दुर्खीम के अनुसार, आर्थिक घटक सामाजिक संस्थानों, खज. ानों, मूल्यों और सामाजिक निर्भरता के सिद्धांत पर आधारित होते हैं, इसलिए दुर्खीम को आर्थिक समाजशास्त्र का जनक माना गया है। दुर्खीम के अनुसार, अर्थशास्त्री अर्थशास्त्र को सामाजिक पक्षों से अलग रखने का प्रयास करते हैं। 'द डिवीजन ऑफ लेबर इन सोसाइटी' में उन्होंने तकनीकी विकास और नगरीकरण के विस्तार से आए अनेक बदलावों को दर्शाया है। इससे इनकी एक-दूसरे पर निर्भरता बढ़ी। इन बदलावों में शामिल हैं—सामाजिक विविधताएँ,

NEERAJ PUBLICATIONS www.neerajbooks.com

www.neerajbooks.com

www.neerajbooks.com

सामाजिक भेदभाव, जैविक एकजुटता, श्रम विभाजन के नए रूप, सामाजिक ढाँचे की जटिलता, कानूनों में बदलाव आदि। कानूनों के परिवर्तनों के अंतर्गत प्रतिबंधात्मक कानूनों की माँग उठी, जैसे कि जुर्माने की अपेक्षा कारावास पर ज्यादा जोर दिया गया। दुर्खीम ने अर्थशास्त्रियों के व्यक्तिगत कार्यों के सिद्धांत की आलोचना कर संस्थागत सिद्धांत पर बल दिया। दुर्खीम के अनुसार, व्यक्तियों का आर्थिक व्यवहार नैतिक मूल्यों द्वारा प्रभावित होता है। जैसे-जैसे नैतिक मूल्य परिवर्तित होते रहते हैं, आर्थिक व्यवस्थाओं में परिवर्ततन आता रहता है। इसका सीधा प्रभाव श्रम विभाजन पर पड़ता है। दुर्खीम के अनुसार, श्रम विभाजन के कारणों को अलग सामाजिक स्रोत से ढूंढ़ा जा सकता है। श्रम विभाजन का आधार लोगों की एकजुटता और मूल्य है।

जार्ज सीमेल (1858-1918)

'द फिलोसफी ऑफ मनी' 1900 में सीमेल ने पुराने पूँजीवादी समाज में पूँजी को विशेष रूप से दर्शाया है क्योंकि पूँजी के अर्थव्यवस्था में उपयोग और परिणामों का समाज में विशेष स्थान है, इसलिए पूँजीवाद एक विशेष आर्थिक व्यवस्था है, जिसमें वस्तुओं का उत्पादन और वितरण मुद्रा आधारित अर्थव्यवस्था का परिणाम माना गया है। पूँजीवाद में पूँजी का निजीकरण अपेक्षित है क्योंकि पूँजी का विनियमन उपकरण के रूप में किया जाता है। इसलिए पूँजीवाद का कार्य क्षेत्र व्यापक है। एक विश्वास द्वारा पूँजी एकत्रित की जा सकती है, यह विश्वास सांस्कृतिक स्थितियों से उपजता है, जिसका संबंध संस्थागत घटकों से है। सीमेल ने माना कि पूँजी आधारित अर्थव्यवस्था एक मजबूत कारक है। इससे अर्थव्यवस्था केंद्र से धन पर नियंत्रण रखकर कार्यों को वास्तविक रूप से पूरा करती है।

आधुनिक राज्य व्यवस्था केंद्रीकृत शक्तियों से निहित होती हैं, जो कि सुव्यवस्थित रूप देती है, इसलिए सामाजिक संबंधों और सामाजिक जीवन को सुनिश्चित करने में पूँजी की प्रमुख भूमिका है, सीमेल द्वारा उसके परिणामों का मूल्यांकन किया गया क्योंकि इससे सामाजिक संबंधों और सामाजिक जीवन में व्यक्तिगत स्वतंत्रता का आधार धन को माना गया है। इसलिए इन संबंधो को विकसित करना, महत्त्व देना और चयन करना आदि कारक उत्पन्न हुए हैं। इस धन आधारित प्रणाली में लोगों को अपनी पसंद के अनुसार चुनाव करना आसान हुआ। मालिक और श्रमिक के स्वतंत्र होने से खपत की पूर्ण स्वतंत्रता प्राप्त हुई।

थॉर्स्टीन वैबलेन (1857-1929)

वैबलेन ने आर्थिक विश्लेषण किया, परंतु इसने सामाजिक और सांस्कृतिक रूप को अलग रखा। वैबलेन ने आर्थिक क्रियाओं के निर्व्यक्तीय सिद्धांत पर बल दिया। उन्होंने समस्या क्षेत्रों में तीन तत्वों को प्रस्तुत किया, जैसे कि

1. आर्थिक प्रक्रिया के सिद्धांत में मानव व्यक्तिवादी विचारधारा से निहित है।
2. आर्थिक विश्लेषण का आधार ध्यान परिवर्तन की अपेक्षा समन्वय पर केंद्रित है।
3. व्यक्तिगत पसंद या सामूहिक हित का आधार सामाजिक मूल्य और मान्यताओं द्वारा निर्देशित है।

वैबलेन द्वारा नवशास्त्रीय अर्थशास्त्र की स्थिर और गैर-ऐतिहासिक प्रकृति को उजागर किया गया है। उनका मानना है कि पारंपरिक दृष्टिकोण समन्वय की प्रकृति से संबंधित है, जो कि अर्थव्यवस्था को स्थिर मानता है। वैबलेन का परिवर्तन का सिद्धांत समाज में एकरूपता की संभावना रखता है, जिसमें तकनीकी और संस्थानों के बीच संबंध अलग पाये गये हैं। 'द थ्यौरी ऑफ लेबर क्लास' (1899) में वैबलेन द्वारा खपत पद्धति के सांस्कृतिक पक्षों की चर्चा की गई है। आधुनिक समाजों की अर्थव्यवस्था व्यक्तिगत आधिपत्य और बाजार के माध्यम से संचालित होती है, जबकि खपत की संभावना व्यक्तिगत स्तर पर उत्पन्न होती है क्योंकि इसका आधार उद्यमियों की प्रतिष्ठा और सामाजिक सम्मान होता है।

टेलकॉट पार्सन (1902-1979) तथा नील स्मैल्सर (1930-)

टेलकॉट पार्सन के अर्थशास्त्र की वैज्ञानिक स्थिति पर विचार लिओनेल रोबिन्स के विचारों से मेल खाते हैं। पार्सन के अनुसार, समाजशास्त्र आर्थिक जीवन के संस्थानों का मूल्यांकन करता है। पार्सन के अनुसार, सामाजिक व्यवस्था की उच्चस्तरीय समस्या का समाधान अन्य की अपेक्षा सामूहिक लक्ष्यों और साझे मूल्यों की पहुँच द्वारा हो सकता है क्योंकि आर्थिक नियम व मूल्य, भौतिक नियमों व मूल्य से अलग होते हैं। पार्सन के अनुसार, आर्थिक नियम मानदंड होते हैं, जो कि विशेष स्थितियों से तार्किक क्रियाओं का प्रतीक माने गये हैं।

पार्सन वैबलेन के संस्थागत अर्थशास्त्र से विरोध रखते थे। पार्सन संस्थागत अर्थशास्त्र से दो प्रकार से विरोध प्रकट करता है, संस्थागत सिद्धांत की विरोधी प्रकृति और प्रौद्योगिकी को संस्थान मानने की और सांस्कृतिक मानदंडों को अस्वीकार करने की प्रवृत्ति। इसके अंतर्गत लक्ष्यों का मूल्यांकन नहीं किया गया क्योंकि व्यक्तियों के लक्ष्य आपस में जुड़े होते हैं। अन्यथा उनके बीच प्रतियोगिता की स्थिति उत्पन्न होगी। 'द इकॉनोमी एंड सोसाइटी' (1956) में पार्सन और स्मैल्सर द्वारा समाजशास्त्र और अर्थशास्त्र को सामाजिक प्रणालियों के समन्वय सिद्धांत के द्वारा समझा जा सकता है। अर्थव्यवस्था की एक सह-प्रणाली के अंतर्गत अन्य सह-प्रणालियाँ पाई गई हैं, जैसे कि वेबर की क्षेत्र की धारणा। इस प्रकार स्मैल्सर द्वारा समाजशास्त्र को उप-क्षेत्र के रूप में स्थापित किया गया-स्मैल्सर द्वारा आर्थिक समाजशास्त्र की व्याख्या में शामिल किया है-गतिविधियों की उत्पादन संबंधी जटिलताएँ, विवरण, विनियमन, उत्पादों और सेवाओं की खपत। आर्थिक समाजशास्त्रियों के अनुसार, गतिविधियों को भूमिकाओं के रूप, सामूहिकता, मूल्यों के आधार, मान्यताओं और प्रतिबंधों पर

NEERAJ PUBLICATIONS www.neerajbooks.com

www.neerajbooks.com

www.neerajbooks.com

नियंत्रण आदि को दर्शाया गया है। स्मैल्सर द्वारा व्यापार संस्थानों में गतिविधियों को प्रभावित करने वाले कारकों का अध्ययन किया गया। व्यापकता के आधार पर राजनैतिक विवादों का आधार समाजों में आर्थिक व्यवस्थाओं को माना है।

आर्थिक विकास : समस्याएँ तथा विरोध

पश्चिमी देशों में आधुनिकीकरण की प्रक्रिया के अंतर्गत शैक्षणिक और नीतिगत ढंग से प्रभुत्व का विस्तार शुरू हुआ। इसके सिद्धांत में शामिल था–उच्चस्तरीय आर्थिक विकास, व्यापार, विदेशी निवेश और पश्चिमी समाज की नीतियां। अर्थशास्त्रियाँ द्वारा जोर दिया गया–औपचारिक प्रतिमान सृजित करना, पूँजी संकलन, बचत प्रोद्यौगिकी में परिवर्तन, राज्यों की गतिविधियों को निर्देशित करना। समाजशास्त्रियों और नृविज्ञानियों द्वारा विकास, संस्थागत परिवर्तन, विकास संबंधी बाधाएं, पारंपरिक सांस्कृतिक और सरंचनात्मक समस्याओं पर बल दिया गया। राजनीति विज्ञानियों द्वारा जोर दिया गया–जनजाति, सांप्रदायिक, स्थानीय व्यवस्थाओं के दलीय हित समूह और आधुनिक राजनैतिक संस्थानों की रुचियों पर विशेष ध्यान दिया गया।

भारत में निर्भरता का सिद्धांत और विश्व व्यवस्था का सिद्धांत महत्त्वपूर्ण रहे। विद्वानों के अनुसार, आधुनिकीकरण की प्रक्रिया पारंपरिक समाजों की परंपराओं को नष्ट कर सकती है। यह माना गया था कि आधुनिकीकरण के कारण विकसित देश विकासशील देशों की उपेक्षा कर रहे हैं और अविकसित देशों से अपना आधिपत्य बनाए रखना चाहते हैं।

निर्भरता के सिद्धांत के अनुसार, प्रतिस्थापन और प्रतियोगिता हेतु औद्योगीकरण पर जोर देते हैं। निर्भरता के सिद्धांत द्वारा उग्र और कम उग्र दो स्वरूपों का उद्भव हुआ, इसलिए अंतर्राष्ट्रीय राजनैतिक और आर्थिक स्तर पर वैश्विक व्यवस्थाएं सामान रूप से चलीं, परंतु निर्भरता के सिद्धांत के अनुसार एक-दूसरे पर आश्रित होने के कारण मंदी के समय में भी विकासशील देशों द्वारा विकसित देशों के प्रति वित्तीय और प्रशासनिक मामलों को लेकर साझेदारी दिखाई दी।

वाशिंगटन सहमति

आर्थिक परंपरागत की प्रवृत्ति के विकासात्मक प्रतिक्रांति स्वरों को वाशिंगटन सहमति के रूप में माना गया है। जॉन विलियमसन द्वारा इसे प्रस्तावित किया गया। इस सहमति में शामिल थे–फ्रीडरिक, मिल्टन फ्रीडमेन, माग्रेट थैचर, रोनाल्ड रीगन आदि। यह विकल्प तीसरी दुनिया को आर्थिक सहायता देने के लिए तैयार किया गया, जिसमें शामिल था–करों में संशोधन, बाजार आधारित ब्याज दरें, विनियमन दरों में प्रतियोगिता, निजीकरण, शर्तों और नियमों के छोर, संपत्ति अधिकारों का संरक्षण। पूर्वी और पश्चिमी यूरोप के बाद संयुक्त राज्य अमेरिका के साम्यवाद को बढ़ावा मिला। 1989-90 में वामपंथियों के बाद पूँजीवादी अर्थव्यवस्था को बढ़ावा मिला। पूँजीवादी विकास के साथ वैश्वीकरण का दौर शुरू हुआ। पूँजीवाद पूरे विश्व में लोकप्रिय हुआ। वाशिंगटन सहमति के साथ समस्त शास्त्रीय आर्थिक सिद्धांत अर्थव्यवस्था में अपनी जगह बनाने लगे। आर्थिक नीतियों द्वारा नव-उदारवाद के साथ मिलकर संरचनात्मक समायोजन नीतियां बनाई गयीं। इनके द्वारा विदेशों से आर्थिक सहयोग प्राप्त किया गया।

बोध प्रश्न

प्रश्न 1. किसी एक शास्त्रीय समाजशास्त्री के अर्थशास्त्र पर विचारों का वर्णन कीजिए।

उत्तर–19वीं शताब्दी के पहले कई शास्त्रीय समाजशास्त्री इस बात से जागरूक थे कि उनके आसपास की दुनिया में कई प्रकार के परिवर्तन हो रहे हैं, जैसे कि आर्थिक, सामाजिक। हालांकि उन्हें उन दिनों समाजशास्त्र की पहचान नहीं मिली, परंतु उन्हें इन परिवर्तनों के कारणों का पता था। उनके अनुसार ये परिवर्तन पूँजीवाद, औद्योगीकरण, नगरीकरण और तकनीकी विकास के कारण हो रहे हैं। इसी प्रकार एक प्रसिद्ध शास्त्रीय समाजशास्त्री दुर्खीम द्वारा सामाजिक तथ्यों और समाज को सामूहिक चेतना के बीच संबंधों का अध्ययन किया था। दुर्खीम आधुनिक समाजों में श्रम विभाजन के बारे में जानना चाहते थे कि श्रम विभाजन समूहों और एकजुटता के निर्माण को कैसे व्यक्त करता है। उनके अनुसार, आधुनिक तकनीकी के विकास के साथ-साथ समाजों में विविधताएँ बढ़ी हैं, जिसके कारण प्रत्येक समाज में समस्याएँ पैदा हुई हैं। उनका मानना है कि आर्थिक समाजशास्त्र की आधारशिलाएं अर्थव्यवस्था और सामाजिक वर्गीय विश्लेषण हैं। दुर्खीम की सरंचना की विचारधारा सरंचना के सिद्धांत के विकास में सहयोगी है, इसलिए बाजार के व्यवहार तथा संस्थानों की गतिविधियों को समझा जा सकता है।

दुर्खीम का कहना है कि आर्थिक कारक सामाजिक गतिविधियों पर निर्भर होते हैं। ये कारक सामाजिक संस्थानों, रुझानों, मूल्यों पर सामाजिक निर्भरता के सिद्धांतों पर आधारित माने गये हैं। हालांकि दुर्खीम द्वारा आर्थिक समाजशास्त्र को स्वतंत्र विज्ञान का रूप देने का असफल प्रयास किया गया। दुर्खीम द्वारा अर्थशास्त्रियों की आलोचना की गई क्योंकि वे अर्थशास्त्र को सामाजिक पक्षों से अलग रखने का प्रयास करते रहते हैं। दुर्खीम द्वारा औद्योगिक समाजों के उद्भव पर अध्ययन किया गया। साथ ही सामुदायिक जीवन में आने वाले परिवर्तनों की समाजशास्त्रीय व्याख्याएँ की गईं। इस तथ्य को उन्होंने अपनी प्रसिद्ध पुस्तक 'द डिवीजन ऑफ लेबर इन सोसाइटी' में दर्शाया है कि तकनीकी विकास और नगरीकरण के विस्तार के कारण समाज पर कई प्रभाव और परिवर्तन देखने को मिले हैं।

हालांकि उनके सामाजिक संपर्क करने के तरीके भिन्न-भिन्न थे, इसलिए कुछ लोगों द्वारा विशेष प्रकार की कला, कौशल और

NEERAJ PUBLICATIONS www.neerajbooks.com

www.neerajbooks.com